राष्ट्र के लिए हम मिलकर काम करते हैं !

आर्थिक उदारीकरण प्रक्रिया को गति मिलने से तस्करी और कर-अपवंचन प्रवृत्ति में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं । जहाँ पारंपरिक तस्करी में आयात नियमों में उदारीकरण और शुल्क दर में कटोती के कारण कमी आई है वहीं दूसरी ओर आयातित वस्तुओं की गलत घोषणा / न्यून मूल्यांकन करके और निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं का दुरुपयोग करके की गई वाणिज्यिक धोखाधड़ियों में किसी प्रकार की कमी नहीं आई है । आगे अब हमें एक और खतरे का सामना करना पड़ रहा है जो कि तस्करों और राष्ट्रविरोधी तत्त्वों के बीच बढ़ते हुए संबंधों के कारण स्वापक द्रव्य, विदेशी मुद्रा, हथियार और विस्फोटक पदार्थ आदि की तस्करी के कारण उत्पन्न हुई है । भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद, नारको आतंकवाद, मनी लांडरिंग, आई.पी.आर. उल्लंघन, साइबर अपराध, खतरनाक पदार्थों का आयात आदि उभरते हुए भूमण्डलीय खतरे मुख्य रूप से चिंता का विषय हैं । वस्तुओं के क्षेपण-जैसे अन्य विषय जो कि भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए चिंता का विषय होते हैं, ऐसे विषयों पर भी नीति निर्माताओं और प्रवर्तक एजेंसियों का समानरूप से ध्यान रहेगा ।

अन्य देशों की तरह भारत में भी आर्थिक अपराध अन्य कई अपराधों या ऐसे सुनियोजित अपराधों से जुड़े होते हैं जिनका असर राष्ट्रीय सुरक्षा पर पड़ता है । तस्करी, कर-अपवंचन और वाणिज्यिक धोखाधड़ियों में उच्च श्रेणी की परिष्कृत प्रवृत्ति देखने में आई है और विश्व में इस तथ्य की ओर ध्यान बढ़ रहा है कि आर्थिक अपराध कई ऐसे अन्य गंभीर अपराधों का हिस्सा होते हैं जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को गंभीर खतरा पहुंचता है और इस विषय पर किसी भी प्रकार की शंका या भ्रम को 11 सितम्बर व 13 दिसम्बर की घटनाओं ने निर्मूल कर दिया है ।